35

परमेश्वर के गवाह

(11:3-6)

पिछले तीन पाठों से हम पढ़ रहे हैं कि छठी और सातवीं तुरही के बीच के अन्तराल और कठिन समयों में कलीसिया को क्या करना चाहिए। हमने परमेश्वर के लोगों को दी गई दो विशेष चुनौतियों पर बल दिया है: (1) परमेश्वर के वचन के लिए धन्यवाद देना और मानना (10:1-11) और (2) उस वचन के आधार पर अपनी परख करके व्यवहार करना (11:1, 2)। इस और अगले पाठ में हम तीसरी चुनौती को देखेंगे: (3) हर हाल में उस वचन का प्रचार करना और सीखना।

इस पाठ में दो गवाहों के अध्ययन का परिचय है। प्रकाशितवाक्य पर परिचायक सामग्री में मैंने पुस्तक में विजय के तिहरे संदेश को समझाने के लिए दो गवाहों की कहानी इस्तेमाल की थी: (1) भलाई और बुराई में झगड़ा; (2) भलाई की दिखाई दे रही पराजय; (3) अन्त में भलाई की विजय।[1] अब मैं उन पांच तथ्यों पर ध्यान देते हुए, जो परमेश्वर के गवाह होने के बारे में आपको पता होने चाहिए, एक अलग ढंग इस्तेमाल करना चाहता हूं *यदि* आपको ये पांच बातें पता हों तो आप हर हाल में वचन का प्रचार करने और इसे सिखाने की चुनौती का सामना कर सकते हैं। पहली तीन बातों को इस पाठ में दिखाया जाएगा।

परमेश्वर आपको शाबाशी देगा (11:3, 4)

अपने विश्वास की ''गवाही'' देने पर आपको ईश्वरीय उद्देश्य की समझ होनी आवश्यक है। आप को यह विश्वास होना आवश्यक है कि ''मैं वहीं हूं, जहां परमेश्वर मुझे चाहता है कि मैं रहूं और मैं वही कर रहा हूं, जो परमेश्वर मुझसे करवाना चाहता है।''

पाठ के लिए वचन आरम्भ होता है, ''और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार[2] दूंगा'' (आयत 3क)। पाठ में दोनों गवाह बिना किसी चेतावनी के प्रकट हुए। यूहन्ना को मन्दिर का नाम लेने की आज्ञा देने के बाद दोनों गवाह अचानक केन्द्रीय मंच पर आ गए। इस बात को समझें कि यह कोई नया दृश्य नहीं है, बल्कि पहले वाला दृश्य ही जारी रहता है। आयत 3 का आरम्भ पिछली आयतों के साथ इसके सम्बन्ध को जोड़ते हुए ''और'' के साथ होता है। यूहन्ना को नापने की आज्ञा देने वाली आवाज़ अभी बोल रही थी।

''और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दूंगा, कि ... भविष्यवाणी करें'' (आयत 3क, ख)। (प्रचार करते हुए दो गवाह का चित्र देख।) ''भविष्यवाणी'' करने का अर्थ

परमेश्वर की ओर से बोलना था। ''गवाह'' क्रिया का अर्थ आंखों देखी बात की गवाही देना (देखें 11:7) था। जैसे मार्टिन किट्टल ने ध्यान दिलाया है कि यूनानी शब्द के अनुसार ''गवाह में एक भयानक स्वाद है, जो अंग्रेज़ी के शब्द में नहीं मिलता।''[3] यह वही शब्द है, जिससे हमें ''शहीद'' शब्द मिला है।

यहां दो गवाहों की गवाही विस्तार से नहीं बताई गई, परन्तु प्रकाशितवाक्य अक्सर ''यीशु की गवाही'' (1:2, 9; 12:17; 19:10; 20:4) अर्थात ''वह साक्षी या गवाही जो [यीशु ने] अपने जीवन, शिक्षा और वचन या परमेश्वर की आज्ञाओं के लिए मरने तक दी''[4] की बात करता है। दो गवाह वही संदेश बता रहे थे, जो यीशु ने दिया था। इसमें सुसमाचार का शुभ समाचार भी होगा परन्तु संदर्भ से यह संकेत मिलता है कि इसमें सुसमाचार को ठुकराने वालों के लिए दण्ड का कठोर संदेश भी था (11:10)।[5] जब यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा,'' तो उसने यह भी जोड़ा, ''परन्तु जो विश्वास न करेगा वह *दोषी* ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)।

आवाज़ ने आगे कहा कि वे ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक भविष्यवाणी करें''[6] (आयत 3ग)। पिछले पाठ में हमने ''सात सौ साठ दिनों'' के सांकेतिक अंक की बात की थी। यह बयालीस माह की तरह ही है, जो 3-1/2 वर्ष जैसे हैं। प्रकाशितवाक्य में हमने ध्यान दिया था कि ''3-1/2'' (सात का आधा) कल के लिए आशा के संकेत के साथ परीक्षा और कठिनाई और परख से जुड़ा हुआ है[7]।परन्तु अभी के लिए हमारे लिए सबसे दिलचस्प बात यह है कि समय की वह अवधि, जिसमें भविष्यवक्ताओं ने गवाही दी, उतनी ही थी, जितनी जातियों द्वारा आंगन और पवित्र नगर को पांव तले रौंदा जाना था (11:2)। कठिन समयों में परमेश्वर ने अपने लोगों को छिपाया नहीं, बल्कि उसने अपने गवाहों को भेजा।

ये गवाह ''टाट ओढ़े हुए'' थे (आयत 3घ)। ''टाट'' एक खुरदरा वस्त्र होता था, जो आमतौर पर किसी पशु के बालों से बनाया जाता था।[8] इसे पाप या हानि के कारण शोक करने वाले लोग पहनते थे (यशायाह 22:12; यिर्मयाह 4:8; योना 3:5; मत्ती 11:21) और भविष्यवक्ताओं द्वारा आमतौर पर पहना जाता था (2 राजा 1:8; यशायाह 20:2; जकर्याह 13:4; मत्ती 3:4)। पापियों को पश्चात्ताप के लिए कहने वाले लोगों के लिए भी यह था। इससे उस कठिनाई का संकेत मिलता था, जो परमेश्वर के संदेश को फैलाने के लिए परमेश्वर के लोगों पर आनी थी। लियोन मौरिस ने कहा है कि ''सुख आराम वाली कलीसिया में न तो उद्धार और न विरोध के लिए संसार को हिलाने की सामर्थ है।''[9]

आयत 4 में दो गवाहों को ''पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े दो अंजीर के वृक्षों और दीवटों'' के रूप में दिखाया गया है।[10] आरम्भिक मसीही जकर्याह नबी से ली गई भाषा को जानते होंगे:

> और उस ने मुझ से पूछा, तुझे क्या दिखाई पड़ता है ? मैं ने कहा, एक दीवट है, जो सम्पूर्ण सोने की है, और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, और उस पर उसके सात दीपक हैं; जिन के ऊपर बत्ती के लिए सात-सात नालियां हैं। और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं, एक उस कटोरे की दाहिनी ओर, और दूसरा उसकी बाईं ओर (जकर्याह 4:2, 3)।

जकर्याह के जलपाई के दो वृक्षों का अर्थ "ताजे तेल से भरे हुए वे दो पुरुष हैं, जो सारी पृथ्वी के परमेश्वर के पास हाज़िर रहते हैं" (जकर्याह 4:14) बताया गया है। आमतौर पर माना जाता है कि जकर्याह की पुस्तक राज्यपाल, ज़रुब्बाबिल (जकर्याह 4:6, 7) और उसके सहकर्मी याजक यहोशू[11] के लिए थी (जकर्याह 3:1; 6:11)।

ज़रुब्बाबेल यकोनिय्याह राजा का पोता (1 इतिहास 3:17-19) था और यीशु तक जाने वाले राजवंश में से था (मत्ती 1:12, 13[12]; लूका 3:27)। कई लोगों का मानना है कि यदि राज्य होता तो सही राजा वही था। उसे और यहोशू को जकर्याह 4:14 में "अभिषिक्त" कहा गया है, क्योंकि राजाओं और याजकों का अभिषेक किया जाता था (1 शमूएल 10:1; 16:12, 13; लैव्यव्यवस्था 8:12, 30)। (अपने मन में "राजा और याजक" के विचार को लटकाकर रखें; बाद में हम इस पर वापस आएंगे।)

ज़रुब्बाबेल और यहोशू बाबुल की दासता से पहली बार लौटने के समय, 520 ई.पू. के लगभग रहते थे।[13] मादी और फारसी लोग बाबुल पर कब्जा कर लेने के बाद बंदियों को अपने देश भेजने लगे। पलश्तीन में पहली वापसी लगभग 50,000 यहूदियों की (एज्रा 2:64, 65) ज़रुब्बाबेल और यहोशू की अगुआई में ही हुई थी (हाग्गै 1:1)। यरूशलेम पहुंचकर वे फिर से मन्दिर बनाने लग पड़े थे, जब विरोध हुआ; तब वे रुक गए। साल बाद परमेश्वर द्वारा काम को पूरा करने के लिए उन्हें उकसाने के लिए हाग्गै और जकर्याह नबियों को भेजा गया (एज्रा 5:1, 2[14])।

जकर्याह 4 अध्याय में जलपाई के दो वृक्षों और दीवट के दर्शन से राज्यपाल पर यह दबाव डाला गया कि *परमेश्वर की सहायता से* वह उस काम को पूरा कर सकता था, जो प्रभु ने उसे करने के लिए दिया था। जकर्याह 4:6 देखें: "ज़रुब्बाबेल के लिए यहोवा का यह वचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझे सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

कोई पूछ सकता है, "तो प्रकाशितवाक्य 11 वाले दो गवाह कौन थे? क्या वे ज़रुब्बाबेल और यहोशू थे?" दो गवाहों की पहचान पर चर्चा बाद में करेंगे, परन्तु अभी मैं इस पर बल देता हूं कि वे ज़रुब्बाबेल और यहोशू *नहीं* थे। पुराने नियम के हवालों के "घुमाव" को देखें जिससे आपको पता चलता है कि प्रकाशितवाक्य किसी *मिलती-जुलती* परन्तु *उसी* घटना की बात नहीं कर रहा है। जकर्याह वाले दर्शन में जलपाई के दो वृक्षों से *एक* दीवट को तेल मिल रहा था:

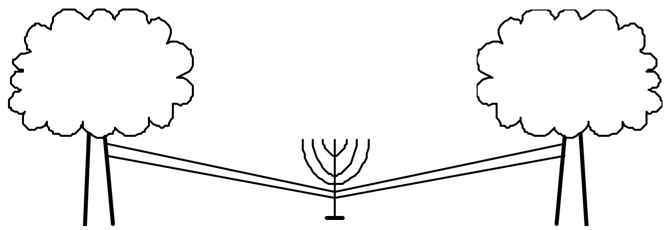

यूहन्ना के दर्शन में *दो* दीवट थे:[15]

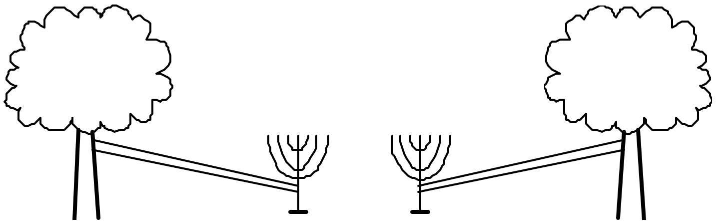

इसलिए हम यकीन से कह सकते हैं कि दो गवाह ज़रुब्बाबिल और यहोशू नहीं थे, बल्कि ज़रुब्बाबेल और यहोशू की *तरह* वे परमेश्वर की आज्ञा और शक्ति पाए हुए लोग थे।

वचन बताने के लिए निकलने पर *आपको* समझ होनी आवश्यक है कि परमेश्वर *आपको* आज्ञा देकर सामर्थ भी देता है। आप वैसे ही ''गवाह'' नहीं हैं, जैसे प्रेरित थे (प्रेरितों 1:8), क्योंकि आप उसके जी उठने के गवाह नहीं हैं (प्रेरितों 1:22), परन्तु आप ''उसे सुनकर'' जो उसने अपने वचन में कहा है, गवाह बन जाते हैं और आपका जीवन आशीषित हो जाता है। आप परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए भविष्यवक्ता नहीं हैं, परन्तु इस परेशान संसार में आपको परमेश्वर का वक्ता होना आवश्यक है (मत्ती 28:19, 20)।

परमेश्वर को आज भी वक्ताओं की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी पहली सदी में थी। ध्यान से देखें कि आराधना को नापने और सुरक्षित करने के बाद (प्रकाशितवाक्य 11:1, 2) वे सुरक्षा के लिए छिपते नहीं फिरे थे, बल्कि परमेश्वर के गवाहों के रूप में प्रभु का संदेश सुनाने के लिए वे दुनियादारी में फंसे नगर में (तुलना 11:2 और 11:8) दृढ़तापूर्वक गए। नमक दानी से चिपके रहने वाले नमक का कोई फायदा नहीं। न ही उस मसीही का जो अपने विश्वास को बताने के लिए खोए हुए लोगों से कभी नहीं मिलता।

> ... कलीसिया के लिए जीवित रहने से भी अधिक महत्वपूर्ण कोई बात है। यह लोगों में गवाही देने के लिए संसार में है, तब भी जब इसकी गवाही का विरोध बलपूर्वक किया जाता है। जितना अंधकार अधिक होगा उतनी ही अधिक कलीसियाओं के लिए वह अर्थात वे दीये, जिनके द्वारा मसीह का प्रकाश चमकता है, बनने की आवश्यकता अधिक होगी।[16]

सुसमाचार को सुनाते हुए आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के आवश्यक भाग को पूरा कर रहे हैं और परमेश्वर इससे प्रसन्न होता है।

लोग आपसे घृणा कर सकते हैं (11:5, 10)

अफसोस की बात है कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करना इस बात का आश्वासन नहीं है कि आपके काम से सब लोग प्रसन्न होंगे या सब लोग आपके संदेश को ग्रहण करेंगे। मुझे एक जवान का ध्यान आता है, जिसे वचन सिखाने के बाद मैंने बपतिस्मा दिया था। वह

बड़ी उत्सुकता से अपने नये विश्वास को मित्रों, परिवार तथा साथियों में बताने लगा। मुझे अभी भी उसकी नकारात्मक प्रतिक्रिया बताने के लिए उसके चेहरे पर आने वाला आश्चर्य दिखाई देता है। गवाही देने की दूसरी सच्चाई जो आपको पता होनी चाहिए, वह यह है कि कुछ लोग आपका विरोध करेंगे और हो सकता है कि आपको हानि भी पहुंचाएं।

दो गवाहों के प्रति संसार की प्रतिक्रिया की बात करते हुए, आयत 5 लोगों द्वारा ''उन्हें हानि पहुंचाने'' की दो बार इच्छा करने के बारे में बताती है।[17] ''उन्हें हानि पहुंचाने'' की इच्छा करने वालों को उनके ''शत्रु'' कहा गया है। भलाई और बुराई में झगड़ा हमेशा रहेगा। झूठ हमेशा सच्चाई का विरोध करेगा।

आयत 10 बताती है कि लोग गवाहों को हानि पहुंचाकर संतुष्ट क्यों थे: ''क्योंकि इन दोनों भविष्यवक्ताओं ने पृथ्वी के रहने वालों को *सताया था*।'' मैं जल्दी से यह दावा कर दूं कि ये वक्ता किसी को सताने *के लिए प्रचार* नहीं कर रहे थे। उनका उद्देश्य तो आत्माओं को बचाना था (रोमियों 1:16)। इसके अलावा हम यकीन से कह सकते हैं कि उन्हें कष्ट परमेश्वर के वचन को तरीके से किसी को बताने में नहीं, बल्कि ''प्रेम में सच्चाई से चलते हुए'' मिला था (इफिसियों 4:15)। बिना घिनौने हुए आक्रामक हुआ जा सकता है।

इसके बजाय लोगों को कष्ट *सच्चाई* से हुआ था, क्योंकि सच्चाई ने उन्हें बेचैन कर दिया था, क्योंकि सच्चाई ने उनके विवेक को जगा दिया था, और सच्चाई ने उनके जीवनों में दोष निकाला था।[18]

पवित्र शास्त्र में ''सताए'' जाने की इस किस्म के कई उदाहरण हैं: जब अहाब राजा ने एलिय्याह को देखा, तो उसने कहा था, ''हे इस्राएल के सताने वाले क्या तू ही है?'' (1 राजा 18:17)। अहाब के अपने पाप के कारण इस्राएल पर सताव आया था; परन्तु राजा की नज़र में दोष एलिय्याह का था।

राजा हेरोदस को उसकी विलासितापूर्ण जीवन शैली के लिए, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जब (हेरोदियास के साथ उसके अवैध विवाह सहित) उलाहना दिया था, तो यूहन्ना के संदेश से हेरोदियास आहत हुई थी (मत्ती 14:3; मरकुस 6:17, 19, 22–24) और जब तक उसने यूहन्ना का सिर थाली में रखवा नहीं लिया, उसे चैन नहीं मिला था।

यीशु ने फरीसियों पर अपनी रीतों को मानने का आरोप लगाकर उन्हें ''दुखी किया'' था और वे उसे मार डालने की योजनाएं बनाने लगे थे (देखें मत्ती 12:14; 15:12; 21:45)। प्रेरितों के संदेश से महासभा ''दु:खी हुई'' थी। महासभा के सामने स्तिफनुस के महान प्रवचन की तरह (प्रेरितों 5:33; 7:54, 57, 58) पौलुस ने ''धर्म और संयम और आने वाले न्याय की चर्चा'' राज्यपाल के साथ की (प्रेरितों 24:25क)।

पौलुस ने अपने प्रचार को ''मसीह की सुगंध'' से मिलाया और कहा कि इसे ग्रहण करने वालों के लिए, उसका संदेश ''जीवन के निमित्त जीवन की सुगंध'' और इसे ठुकराने वालों के लिए उसकी बातें ''मरने के निमित्त मृत्यु की गंध'' थीं (2 कुरिन्थियों 2:14–16)। यूजीन पीटरसन ने पौलुस के शब्दों को इस प्रकार दोहराया है: ''... हम परमेश्वर की ओर ऊपर को सुगंधित इत्र छोड़ते हैं, जिसे उद्धार की साइड वाले लोग जीवन से सुगंधित

महक कहते हैं, जबकि विनाश की ओर वाले लोग हमें सड़ी हुई लाश की बदबू समझते हैं।''[19]

सच्चाई से सताए जाकर लोग हमारा विरोध करेंगे। ''आघात किया हुआ विवेक पलट कर आघात करेगा; डंसा हुआ विवेक डंसेगा।''[20] परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा का पालन करने से हमारे साथ दुर्व्यवहार हो सकता है। यीशु ने अपने चेलों को चौकस किया था, ''मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे'' (मत्ती 10:22क; देखें मत्ती 24:9; लूका 21:17; यूहन्ना 16:33)। पौलुस ने स्पष्ट कहा कि ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)।

रॉबर्ट माउंस ने लिखा है कि ''संसार ने परमेश्वर के संदेश के प्रति घृणा ही दिखाई है,'' और फिर जोड़ा कि यह सच्चाई ''बढ़ती हुई बुराई वाले संसार में सुख से रहने के बजाय समकालीन कलीसिया के लिए चिंता का विषय होनी चाहिए।''[21] थॉमस टोरेंस ने ऐसा ही अवलोकन किया है:

> यीशु मसीह की कलीसिया आज अपने आस-पास चैन से क्यों बैठे? मसीही लोग इस बुरे और गड़बड़ी से भरे संसार में ऐसे सुख और परेशानी रहित जीवन क्यों बिताएं? निश्चय ही इसलिए क्योंकि हम परमेश्वर के वचन के विश्वासी नहीं हैं।[22]

यदि आप वही काम करते हैं, जो परमेश्वर आपसे कहता है तो यकीन जानें कि कुछ लोग इसके लिए आपसे घृणा करेंगे ही।

परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा (11:4-6)

मनुष्य आपको हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं, परन्तु याद रखें कि जब आप परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं, तो परमेश्वर आपकी पूरी रक्षा करेगा।[23]

परमेश्वर के लोगों को रक्षा के लिए नापा गया है (11:1, 2)। प्रभु की ईश्वरीय रक्षा को अब आयत 5 में सांकेतिक शब्दों में व्यक्त किया गया है: ''यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाता है, तो उनके मुंह से आग निकलकर उनके बैरियों को भस्म करती है; और यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहेगा तो अवश्य इसी रीति से मार डाला जाएगा।'' जो भी गवाहों को हानि पहुंचाएगा, उसका अन्त ऐसा ही होगा।

यह आयत हमें एलिय्याह का स्मरण कराती है, जब राजा अहज्याह ने बूढ़े नबी को पकड़ने के लिए सिपाही भेजे थे। पचास सिपाहियों की दो टुकड़ियों को आकाश से गिरी आग ने भस्म कर दिया था (2 राजा 1:10, 12) और तीसरी टुकड़ी ने परमेश्वर के प्रवक्ता के प्रति सम्मान दिखाया था।[24] परन्तु ध्यान दें कि प्रकाशितवाक्य 11:5 वाली आग गवाहों के *मुंहों* से निकली थी न कि एलिय्याह के समय गिरने वाली आग की तरह आकाश से। इसलिए संकेत एक और भविष्यवक्ता से कही गई परमेश्वर की बात से मिलता है: ''इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, ये लोग जो ऐसा कहते हैं, इसलिए देख, *मैं अपना वचन* तेरे मुंह में आग, और इस प्रजा को काठ बनाऊंगा, और वह उन्हें भस्म करेगी'' (यिर्मयाह 5:14)।[25] दो गवाहों द्वारा दिया गया *संदेश* ''संसार को दर्द देने वाला

अभियोग'' था।[26]

मुंह से आग निकलने की योग्यता के अलावा, यूहन्ना ने कहा कि गवाहों को यह ''अधिकार है कि आकाश को बन्द करें कि उनकी भविष्यवाणी के दिनों में मेंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लहू बनाएं, और जब-जब चाहें तब-तब पृथ्वी पर हर प्रकार की आपत्ति लाएं''[27] (आयत 6)।

यदि आप बाइबल के जानकार हैं तो आयत 6 पढ़ते हुए एलिय्याह और मूसा का ध्यान आता है।[28] आकाश को बन्द करना कि उससे मेंह न बरसे हमें एलिय्याह के समय 3-1/2 वर्ष के सूखे का स्मरण कराता है (लूका 4:25; याकूब 5:17)।[29] पानी का लहू बनना और महामारी से पृथ्वी पर विपत्ति आना हमें फिरौन के साथ मूसा के सामने का ध्यान दिलाता है (निर्गमन 7:17-20; देखें 1 शमूएल 4:7, 8)।

क्या इसका अर्थ यह है कि ये दोनों गवाह मूसा और एलिय्याह ही थे? व्यवस्थाविवरण 18:15, 18 और मलाकी 4:5, 6 की प्रतिज्ञाओं के आधार पर यहूदियों का यही मानना था कि मूसा और एलिय्याह दोनों वापस आएंगे, परन्तु नये नियम में यह स्पष्ट है कि एलिय्याह के आने की प्रतिज्ञा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई में पूरी हो गई थी (मत्ती 11:11-14; 17:11-13; लूका 1:13, 17) और मूसा जैसे भविष्यवक्ता की प्रतिज्ञा यीशु में पूरी हो गई थी (प्रेरितों 3:19-26)। दोनों गवाह यदि ज़रुब्बाबेल और यहोशू नहीं थे तो मूसा और एलिय्याह भी नहीं थे।[30]

बल्कि दोनों गवाह मूसा और एलिय्याह ''की आत्मा में'' आए थे। परमेश्वर द्वारा उन्हें वैसे ही भेजा गया था, जैसे मूसा और एलिय्याह को। परमेश्वर की ओर से उन्हें वैसे ही सामर्थ दी गई थी जैसे मूसा और एलिय्याह को दी गई थी। इससे भी बढ़कर वे वैसे ही विजयी होने थे जैसे मूसा और एलिय्याह हुए थे। फिरौन मूसा को नहीं रोक पाया था और राजा अहाब एलिय्याह को नष्ट नहीं कर पाया था। ऐसे ही सम्राट डोमिशियन या संसार के किसी भी अधिकारी की सामर्थ परमेश्वर के गवाहों को परमेश्वर का काम पूरा करने से रोक नहीं सकती थी।

शायद मुझे फिर से यह ज़ोर देने के लिए रुकना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य 11:5, 6 की भाषा प्रतीकों में है न कि अक्षरश:। मसीही गवाहों ने कलीसिया के आरम्भिक दिनों की चमत्कारी शक्तियों के साथ भी अपने मुंह से आग नहीं निकाली थी, सूखा नहीं पड़ा था और न ही कभी उन्होंने पानी को लहू बनाया था। ये संकेत केवल इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि परमेश्वर के गवाहों को परमेश्वर की ओर से सामर्थ दी गई थी और वही परमेश्वर आज उन लोगों को सामर्थ देता है, जो उसके वचन का प्रचार करते हैं। हमारे पास आश्चर्यकर्म करने की शक्ति नहीं है,[31] परन्तु परमेश्वर आज भी ''ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20)।

मुझे किसी की परेशान आवाज़ सुनाई दे रही है: ''आप इस मुद्दे से बहुत देर से बच रहे हैं। यदि दो गवाह वास्तव में ज़रुब्बाबिल और यहोशू या मूसा और एलिय्याह नहीं थे,

तो वे *थे* कौन ?'' उनकी पहचान के बारे में ''सुझावों की कमी नहीं है,''[32] और न ही ''नामों की सूची'' का अन्त है।[33]

इन्हें दो व्यक्तियों के रूप में पहचानने के लिए कई टीकाकारों द्वारा काफ़ी प्रयास किए जा चुके हैं: कई दोनों लोगों को कालांतर में होने को प्राथमिकता देते हैं, जैसे पतरस और पौलुस। कई वर्तमान में दो लोगों (साम्प्रदायिक गुट दो गवाहों को स्वयं और उनके दाहिने हाथ वाले लोगों को पहचानना पसंद करते हैं) का विकल्प देते हैं। कई यह मानने लगते हैं कि दोनों भविष्य में होने वाले गवाह हैं; प्रीमिलेनियलिस्ट अक्सर यह प्रचार करते हैं कि परमेश्वर के दो प्रवक्ता उनके काल्पनिक सात साल के कष्ट के समय जी उठेंगे।

इनमें से अधिकतर व्याख्याएं प्रकाशितवाक्य को ऐसी पुस्तक में बदल देती हैं, जो आरम्भिक मसीहियों को शांति देने के बजाय उन्हें तरसाती हुई लगती हैं। किड्डल की टिप्पणियां हमें याद दिलाती हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हल करने के लिए कोई पहेली नहीं थी, बल्कि ''विश्वासी लोगों के लिए जीवन और मृत्यु का संदेश था''[34]:

> यूहन्ना अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार लोगों के लिए लिख रहा था; ... वास्तव में उसने यह उत्तर देने के लिए लिखा जिसे मसीही लोगों का सबसे बड़ा प्रश्न कहा जा सकता है: ''कलीसिया पर शाही सताव की तलवार गिरने पर क्या होगा ?''[35]

अन्य टीकाकारों को दो गवाहों को मूल अर्थ में लेना मूर्खता लगता है, सो वे एक सांकेतिक महत्व पर ज़ोर देते हैं, परन्तु मानते हैं कि *दो* अंक की व्याख्या मूल में ही की जानी चाहिए। इस प्रकार उन्हें लगता है कि उन्हें व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं या पुराने और नये नियमों के दो के प्रतीक को स्पष्ट करना चाहिए। इन व्याख्याओं में सच्चाई की बात है,[36] परन्तु अर्थ शायद इससे कहीं आसान।

अपने आप को यूहन्ना के पाठकों की जगह रखें: दोनों गवाहों ने *गवाही दी* थी (11:7)। क्या हमने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में गवाही देने की बात पढ़ी है ? हां: यूहन्ना ''परमेश्वर के वचन *और यीशु की गवाही* के कारण पतमुस नामक टापू में था'' (1:9; देखें 1:2)। वेदी के नीचे के पवित्र लोग ''परमेश्वर के वचन के कारण, *और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी,* वध किए गए थे'' (6:9)। अगले अध्याय में हम देखेंगे कि अजगर (शैतान) विश्वासी मसीहियों के साथ ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और *यीशु की गवाही* देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया'' (12:17ख; देखें 12:11)। गवाही देना कुछ चुने हुए लोगों का काम नहीं था; यह तो कलीसिया के हर सदस्य के लिए आवश्यक था।

दो गवाहों को *दीवट* के रूप में दिखाया गया है (आयत 4)। हमने दीवट के बारे में पढ़ा है ? हां: ''... और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं'' (1:20)। मसीह की देह के हर अंग के लिए सच्चाई की ज्योति को थामना आवश्यक है (मत्ती 5:14–16; इफिसियों 5:8; फिलिप्पियों 2:15; 2 कुरिन्थियों 4:4, 6)।

दो गवाहों की तुलना *राजा और याजक* से की गई (आयत 4)। (मैंने आपसे मन में यह विचार रखने के लिए कहा था।) क्या आपने राजाओं और याजकों के बारे में पढ़ा है ?

हां: 1:6 और 5:10 दोनों में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि परमेश्वर ने "हमें [अर्थात सब मसीहियों को] एक राज्य[37] और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया।" हम राजसी याजक हैं।

लोग दोनों गवाहों को *हानि* पहुंचाना चाहते थे (आयत 5)। क्या हमने गवाही देने वालों को हानि पहुंचाने की कोशिश करने की बात पढ़ी है? हां: यूहन्ना को निर्वासित कर दिया गया था (1:9)। उस समय कलीसिया पर सताव हो रहा था (1:9; 2:9) और इससे भी बड़ा कष्ट आने वाला था (2:10; 3:10; 7:14)।

एक पल में हम देखेंगे कि दोनों गवाह *मार डाले* गए (11:7)। क्या हमने अपनी गवाही के कारण किसी के मारे जाने की बात पढ़ी है? हां: अन्तिपास अपने विश्वास के लिए शहीद हुआ था (2:13) और मसीही भी "परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण, जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे" (6:9)। भविष्य में इससे भी अधिक मारे जाने थे (6:11)।

इसे मन में रखते हुए और इस वचन को "पहली शताब्दी की ऐनकों में से" देखते हुए[38] आपको क्या लगता है कि यूहन्ना के समय के मसीही दो गवाह किन्हें मानते होंगे? उनके पहले विचार निश्चय ही उन मसीही मित्रों के बारे में होंगे, जो अपने विश्वास के लिए मर चुके थे। फिर और सोचते हुए क्या वे यह अहसास नहीं करते होंगे कि यह दृश्य *उनके अपने* भविष्य की रूपरेखा है? मैं मसीही लोगों को यह वचन पढ़ते हुए गम्भीर होते और एक-दूसरे की ओर सिर मारते हुए देख सकता हूं। मैं एक भाई के यह बुड़बुड़ाने की कल्पना कर सकता हूं, "यह हमारे लिए है! हमारे लिए ही कहा गया है!"

मेरा प्रस्ताव है कि पहली शताब्दी के दो गवाह उन सभी विश्वासियों को कहा गया है जो कष्ट की बड़ी परीक्षा में से निकलने वाले थे। मैं तो यह भी दावा करता हूं कि ये दोनों गवाह हर युग के हर विश्वासी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, सब का जो हर हाल में सच्चाई के लिए डटे रहने को तैयार हैं।

कोई आपत्ति कर सकता है, "परन्तु गवाह *सभी* विश्वासी मसीहियों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सके, क्योंकि वे तो केवल *दो* थे न कि सैकड़ों-हज़ारों।" प्रकाशितवाक्य में अंकों में "दो" का अर्थ मूल नहीं, बल्कि सांकेतिक है। एक परिचय पाठ में[39] हमने कहा था कि "दो" शक्ति का अंक है। (देखें सभोपदेशक 4:9-11.) पुराने और नये दोनों नियमों में किसी बात को पक्का करने के लिए कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता होती थी (व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; मत्ती 18:16; 1 तीमुथियुस 5:19)। यीशु ने अपने कर्मियों को दो-दो करके भेजा (मरकुस 6:7; लूका 10:1); एक की कमी दूसरा पूरी कर सकता था।

आयत 7 इस बात की पुष्टि करती है कि अंक "दो" का अर्थ मूल लेने के लिए नहीं दिया गया था: "... पशु ... उनसे लड़ेगा।" *दो* लोगों से लड़कर "युद्ध" नहीं हो जाता परन्तु *सैकड़ों-हज़ारों* को मारने से हो सकता है। अगले अध्याय में ज़ोर दिया गया है कि दुष्ट शक्तियां उन *सब* से जो "परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर

स्थिर हैं'' युद्ध करेंगी (12:17)।

अभी-अभी दिए गए शब्दों को ध्यान से देखें: ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं'' अर्थात उन से नहीं ''जो शहीद हो गए हैं,'' बल्कि ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।'' कुछ टीकाकार उस मूल सच्चाई को मानते हैं, जो मैंने कही है, परन्तु फिर वे इसे केवल शहीदों पर लागू करते हैं। कलीसिया के इतिहासकारों के साथ, कुछ लोग यह मानने लगे थे कि हर शहीद एक सुपर संत है, अर्थात विश्वास के लिए शहीद होने वाला व्यक्ति सीधे स्वर्ग में जाता है, चाहे जीते जी उसने कुछ भी क्यों न किया हो। परन्तु प्रकाशितवाक्य में दिया जाने वाला ज़ोर विश्वास के लिए मरने पर इतना अधिक है कि यह विश्वास के लिए *मरने को तैयार* होने *के लिए है* (देखें 2:10)।

फिर, मैं कहता हूं कि परमेश्वर हर हालात में उसकी गवाही देने वाले अपने *सभी* बच्चों की रक्षा करेगा।

सारांश

हमने पांच तथ्यों वाली एक चर्चा आरम्भ की है, जो गवाही देने के बारे में आपको पता होनी आवश्यक है। हम पहली तीन बातों पर विचार करते हैं: (1) यदि आप परमेश्वर की गवाही देते हैं तो वह आपको शाबाशी देगा; (2) यदि आप उसकी गवाही देते हैं, तो लोग आपसे घृणा कर सकते हैं; (3) यदि आप उसकी गवाही देते हैं, तो परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा। अन्तिम तीन बातें अगले पाठ में जोड़ी जाएंगी।

अन्त में ईमानदारी से अपने मन को टटोलने के लिए समय निकालें: क्या *आप* आवश्यकता पड़ने पर मसीह के लिए जान देने को तैयार हैं? क्या आप प्रभु की कलीसिया के सदस्य हैं? क्या आप ''यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं''? यदि इन प्रश्नों के लिए आपका उत्तर ''हां'' है तो आप उन दो गवाहों के अद्‌भुत समूह में हैं। जान लें कि जब आप वचन लेकर जाते हैं, तो परमेश्वर निश्चय ही आपके साथ वैसे ही है जैसे ज़रुब्बाबिल, यहोशू, एलिय्याह और मूसा के साथ था। तब भी (या विशेषकर जब) लोग आपका विरोध करें। ग्रेट कमीशन देने के बाद यीशु ने यह प्रतिज्ञा की: ''और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)।[40]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

प्रकाशितवाक्य के संदेश के सार को समझने के लिए दो गवाहों की कहानी आदर्श है। इसके लिए आपको चाहिए कि इस पुस्तक में दिए ''प्रचार कर रहे दो गवाह,'' ''गली में पड़े दो गवाह'' और ''स्वर्ग में उठाए जा रहे दो गवाह'' चित्रों को बड़ा कर लें और बोर्ड पर, बड़े कागज़ या गत्ते पर या बड़ी स्क्रीन पर प्रोजेक्टर के द्वारा दिखाएं। पहली तस्वीर में आयत 4 के साथ जोड़ने के लिए अंजीर के वृक्षों और दीवटों का संकेत मिलाया गया है।

4 से 6 आयतों पर बात करते हुए कालांतर में परमेश्वर के गवाहों के कुछ जोड़ों की

तुलना प्रकाशितवाक्य 11 वाले जोड़े से करने के लिए चार्ट बनाया जा सकता है। आपकी सोच को आगे बढ़ाने के लिए नीचे एक आसान सा चार्ट दिया गया है:

कालांतर में परमेश्वर के गवाह		
लोग	**सामर्थ**	**उद्देश्य**
ज़रुब्बाबिल और यहोशू	परमेश्वर का आत्मा	सामर्थ दी गई
एलिय्याह (और अलीशा)	सूखा और आग	अजेय
मूसा (और हारून)	विपत्तियां	यातना देने वाली

इस और अगले पाठ को मिलाकर एक पाठ बनाया जा सकता है।

अध्याय 11 के लिए एक और ढंग इस प्रकार है: ''भले मनुष्य को अधीन नहीं किया जा सकता'':

क. जब वह परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा हो (आयतें 3, 4)
ख. जब वह विजयी हो (आयतें 3-5)
ग. जब वह हारता हुआ लगे (आयतें 6-10)
घ. हार न माने तो (आयतें 11-13)
   1. वह विजयी होगा (वह फिर उठेगा)।
   2. भलाई हासिल होगी (उन्होंने परमेश्वर को महिमा दी)।

''विजय'' के विषय पर एक और ढंग हो सकता है:

क. प्रचार करने में विजय (चाहे उन गवाहों ने किसी का मन परिवर्तन नहीं किया था) (आयतें 3-6)
ख. झगड़े में विजय (चाहे गवाहों को मार ही दिया गया) (आयत 7)
ग. अपमान में विजय (चाहे गवाहों को अपमानित किया गया) (आयतें 8-10)
घ. अन्ततः जी उठने में विजय (आयतें 11-13)

इस ढंग का उद्देश्य यह दिखाना है कि विजय इस कहानी के आरम्भ में और अन्त (''विजय के सिरे''), में ही दिखाई नहीं देती, बीच में पराजय है, बल्कि कहानी विजय से पैक है। हम विजय ही होते हैं *यदि हम वही करें जो परमेश्वर हम से करने को कहता है*-परिणाम चाहे जो भी हों।

टिप्पणियां

[1]*टुथ फॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए'' पाठ देखें। [2]''अधिकार'' शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। मूल यूनानी में केवल इतना ही है, ''मैं अपने दोनों गवाहों को दूंगा।'' KJV के अनुवादकों ने "power" शब्द जोड़ लिया। ज़ोर इस तथ्य पर है कि नियन्त्रण *परमेश्वर* का है। [3]मार्टिन किड्डल, *द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन,* द मौफ़ेट न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री सीरीज़ (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1940), 194. [4]जे.डब्ल्यू रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 162. [5]उन्हें दिए जा सकने वाले दण्ड की किस्म के उदारहण के लिए देखें 14:7, 9-11. [6]सुझाव दिया गया है कि ''महीनों'' के बजाय ''दिनों'' का उल्लेख (11:2) इसलिए है क्योंकि गवाही देना प्रतिदिन की प्रक्रिया है। [7]कुछ लोग यह नहीं मानते कि प्रकाशितवाक्य में 3-1/2 (अलग-अलग रूपों में) प्रतीकात्मक है। वे यह ज़ोर देते हैं कि इस संख्या का अर्थ यही लिया जाना चाहिए। इस विचार की असंगतियों की एक चर्चा, जिम्म मैक्गुइगन, ''अपैंडिक्स 1: स्क्रोनोलॉजी ऑफ द मिलेनियम व्यू,'' *द बुक ऑफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनेशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 347-54 में मिलती है। [8]जहां आप रहते हैं वहां खुरदरे टाट जैसे भी बनाए जाते हैं, बनाकर बात को समझाया जा सकता है। अमेरिका में, चारे वाली बोरियां आमतौर पर टाट से बनाई जाती है। [9]लिओन मौरिस, *रैवलेशन, संशोधित संस्करण.,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 144. [10]''पृथ्वी का प्रभु'' वाक्यांश इस बात पर ज़ोर देता है कि उसका हर चीज़ पर नियन्त्रण है। उसके ''सामने खड़े'' होने का अर्थ उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार रहना है।

[11]यह निश्चय ही मूसा के दाहिने हाथ और बाद में प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएलियों को ले जाने वाले यहोशू से अलग है। [12]KJV की तरह हिन्दी की बाइबल में यीशु की वंशावली की सूची वाले ''यकोनिय्याह'' और ''ज़रुब्बाबेल'' के शब्द जोड़ में अन्तर किया गया है। [13]एज्रा 2 से 6 इस वापसी के बारे में बताता है। हाग्गै की पुस्तक भी देखें। [14]एज्रा ''यहोशू'' को ''येशु'' कहता है। ''येशु'' ''यहोशु'' का एक और शब्द जोड़ है। [15]दोनों दर्शनों में एक और अन्तर यह है कि जकर्याह के दर्शन में हाकिम और याजक जैतून के पेड़ थे, जबकि दीवट स्पष्टतया पमेश्वर का वचन था (जकर्याह 4:1-6, 11-14)। यूहन्ना के दर्शन में दोनों गवाह ही पेड़ और दीवट थे। [16]जी. आर. बिस्सले मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू कमैंट्री बाइबल सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 181. [17]11:5 में ''यदि'' का इस्तेमाल ''जब'' के अर्थ में हुआ है। [18]शैतानी टिड्डियों का अध्ययन करते समय पापी को मिलने वाली यातना की एक और किस्म हमने देखी थी (9:3, 5)। वह यातना पापी पर पाप का परिणाम थी। वचन का प्रचार करने से मिलने वाली यातना वही यातना नहीं है बल्कि इससे अलग है: कई बार उन्हें जो पहले ही अपने पाप के कारण दु:खी होते हैं बताया जाता है कि उनके काम से परमेश्वर नाराज़ होता है और वे अपना जीवन बदल लें, तो वे क्रोधित हो जाते हैं। [19]यूजीन एच.पीटरसन, *द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्स एण्ड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995), 441. [20]मायर पर्लमैन, *विंडोज़ इनटू द फ्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 96.

[21]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 227. [22]थॉमस एफ. टौरैंस, *द अपोकलिप्स टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 70. [23]जैसा हमने पहले जोर दिया है परमेश्वर हर बात में हमारी रक्षा नहीं करता। हम अभी भी बीमारी और मृत्यु के अधीन हैं, परन्तु वह हमारी रक्षा उसमें करता है, जो सबसे महत्वपूर्ण है: वह हमारे प्राणों की रक्षा करता है। [24]*टुथ फ़ॉर टुडे* (सितंबर 1993, अंग्रेज़ी) से अंक ''एलिय्याह (2)'' में पृष्ठ 28 से आरम्भ होने वाले पाठ ''हू सेज आई एम टू कोल्ड'' में देखें। प्रभु की ओर भस्म करने वाली आग मूसा की सेवकाई का भाग भी थी (गिनती 16:35)। [25]भस्म करने वाली आग के हवाले लूका 9:54-56 के उलट नहीं हैं, जहां याकूब और यूहन्ना को यीशु ने

इसलिए डांटा था क्योंकि लोगों को भस्म करने के लिए वे आकाश से आग बुलाना चाहते थे। प्रकाशितवाक्य 11 वाली मृत्यु सुसमाचार को मानने से इनकार करने के कारण आने वाली आत्मिक मृत्यु है। [26]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 137. आप चाहें तो जोड़ सकते हैं कि परमेश्वर का संदेश *आज भी* सामर्थ से भरा है (प्रेरितों 2:37; रोमियों 1:16; इब्रानियों 4:12)। [27]"जब-जब चाहें" का अर्थ यह नहीं है कि जब भी उन्हें अच्छा लगा, उन्होंने अपने शत्रुओं को दण्ड दे दिया। कहने का अर्थ यह है कि *आवश्यकता पड़ने पर* वे ऐसा कर सकते थे। [28]मूसा और एलिय्याह का मिलना कई लेखकों को रूपांतर पर्वत पर उनका दिखाई देना याद दिलाता है (मत्ती 17:3)। [29]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अगस्त 1993 के अंग्रेज़ी) में अंक "एलिय्याह (1)" में पृष्ठ 37 से आरम्भ होने वाले पाठ "द सीक्रेट ऑफ आन्सर्ड प्रेअर" में देखें। [30]आयत 8 "उनके [अर्थात दो गवाहों के] प्रभु" की बात है, जो "क्रूस पर चढ़ाया गया था।" यह इस बात का संकेत हैं कि दोनों गवाह *मसीही* थे, जो कि ज़रुब्बाबिल, यहोशू , एलिय्याह और मूसा नहीं थे।

[31]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अप्रैल 1995 के अंग्रेज़ी) के अंक "होली स्प्रिट" में पृष्ठ 48 से आरम्भ होने वाले फिल सैंडर्स के लेख "डज़ एनीवन हैव मिरेकुलस गिफ्ट्स टुडे" और (जनवरी 1999) अंक ओवन आलब्रिट के "होली स्प्रिट" अंक में पृष्ठ 31 से आरम्भ होने वाले पाठ "मिरेकल्स एण्ड द होली स्प्रिट" में देखें। [32]मौरिस, 143. [33]माउंस, 223n. [34]किड्डुल, 193. [35]वही। [36]कई लेखक यह ध्यान दिलाते हुए कि मूसा और नबी दोनों यीशु की गवाही देते हैं मूसा को व्यवस्था का और एलिय्याह को नबियों का प्रतिनिधि मानते हैं (लूका 24:44; यूहन्ना 5:39)। अन्य यह ज़ोर देते हैं कि नये नियम के लेख भी यीशु की गवाही देते हैं (देखें यूहन्ना 20:30, 31)। [37]KJV में "kings" है। [38]*रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासेस,* संपा. बॉब प्रीचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 85 नाम से प्रकाशितवाक्य पर डब्ल्यू बी. वेस्ट जूनि. की पुस्तक। [39]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में "यहां अजगर होंगे!" पाठ देखें। [40]इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करना हो तो सुनने वालों को बताएं कि मसीही कैसे बनना है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27) और परमेश्वर का भटका हुआ बालक घर वापस कैसे आ सकता है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पाठ के अनुसार, छठी और सातवीं तुरही के बीच के अन्तराल में कलीसिया को कौन-सी तीन चुनौतियां दी गई हैं?
2. प्रकाशितवाक्य के तिहरे संदेश की समीक्षा करें। दो गवाहों की कहानी से इसे कैसे समझाई गई है?
3. पाठ के अनुसार, गवाही देने के लिए सबसे पहली बात क्या पता होनी चाहिए?
4. "गवाही" शब्द का क्या अर्थ है? हम जी उठने के गवाह वैसे नहीं हो सकते जैसे प्रेरित थे, परन्तु फिर भी हम गवाह हो सकते हैं? गवाह के लिए यूनानी शब्द से कौन सा "भयंकर" अंग्रेज़ी शब्द मिला है?
5. सांकेतिक अंक "3-1/2" के मूल अर्थ पर विचार करें। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "3-1/2" अंक के कुछ रूप बताएं।
6. "टाट" क्या होता था और बाइबल के समयों में कई बार इसे क्यों पहना जाता था? जहां आप रहते हैं वहां टाट बनाने के लिए किस सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है?
7. ज़रुब्बाबेल और यहोशू के विवरण की समीक्षा करें। परमेश्वर के आज के गवाह

उनके जैसे कैसे हैं ?

8. पाठ के अनुसार गवाही के बारे में दूसरी कौन-सी बात पता होनी आवश्यक है ?
9. जब आप सुसमाचार बताने की कोशिश करते हैं तो क्या सब लोग आपके प्रयासों को सराहेंगे ? क्या आपको कभी उन लोगों द्वारा ठुकराया गया है, जिनकी आपने सहायता करने की कोशिश की ?
10. शुभ समाचार (सुससाचार) किस अर्थ में खोए हुए कुछ लोगों को *सताता* है ?
11. पाठ के अनुसार, गवाही के बारे में तीसरी कौन सी बात पता होनी आवश्यक है ?
12. उन ढंगों पर चर्चा करें जिन में परमेश्वर की विश्वासी संतान की रक्षा होती है और जिन में नहीं होती।
13. मूसा और एलिय्याह आज के गवाहों की तरह कैसे हैं ?
14. पाठ के अनुसार दो गवाह किसका प्रतिनिधित्व करते हैं ? क्या आप सहमत हैं या असहमत ? क्यों ?
15. क्या आप हर किसी की, जिसे आप जानते हैं ''गवाही'' देने की कोशिश कर रहे हैं ?

प्रचार करते दो गवाह (11:3)